



## बोल उठी बिटिया

- सुभद्रा कुमारी चौहान

इस कविता में बिटिया की तुतली बोली और मौज से मिट्टी खाने के प्रसंग का वर्णन है। बेटी की मंजुल मूर्ति देखकर खिल उठनेवाली माँ की ममता का सहज चित्रण भी है।

मैं बचपन को बुला रही थी,  
बोल उठी बिटिया मेरी;  
नंदनवन-सी फूल उठी,  
यह छोटी-सी कुटिया मेरी।

‘माँ ओ’ कहकर बुला रही थी,  
मिट्टी खाकर आयी थी;  
कुछ मुँह में, कुछ लिये हाथ में,  
मुझे दिखाने लाई थी।

पुलक रहे थे अंग दृगों में,  
कौतूहल था छलक रहा;  
मुँह पर भी आह्लाद लालिमा,  
विजय गर्व था झलक रहा।

\*\*\*

### कवि परिचय :

सुभद्रा कुमारी चौहान हिन्दी की प्रसिद्ध कवयित्री हैं। आपका जन्म 1904 में हुआ और मृत्यु 1948 को एक कार दुर्घटना में हुई। आपकी काव्य पंक्तियाँ